शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

म.प्र. में लघु, सूक्ष्म एवं वृहद उद्योगों की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सोनू वर्मा (शोधार्थी)
डॉ.एन.एल.गुप्ता (निर्देशक)
प्राध्यापक वाणिज्य
शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बड़वानी, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्यप्रदेश राज्य भारत का सबसे बड़ा दूसरा राज्य है जो प्राकृतिक सम्पदा की दृष्टि से सम्पन्न होने के बाद भी औद्योगिक दृष्टि से काफी पिछड़ा है। खनिज, वन व जल संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास काफी धीमी गति से हुआ है। योजनाकाल में किये गये सरकारी प्रयत्नों से राज्य में औद्योगिक क्रियाओं का विस्तार अवश्य हुआ है। पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से भारत सरकार सूक्ष्म, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे रही है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में विभिन्न समितियों का गठन कर इस क्षेत्र को प्रोत्साहन व वित्तीय सहायता प्रदान की गयी है। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यप्रदेश में लघु, माध्यम एवं वृहद उद्योगों की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

भारत के मध्य में स्थित मध्यप्रदेश देश का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। क्षेत्रफल की श्रेणी में आबादी के अनुसार भारत का छठा तथा सकल राज्य घरेलू उत्पाद में नवें स्थान पर गिना जाता है। मध्यप्रदेश देश में सबसे तेजी से बढ़ते राज्यों में से एक है। वर्ष 2014-15 में मध्यप्रदेश का सकल घरेलू उत्पाद 5.08 लाख करोड़ दर्ज किया गया था। वर्ष 2013-14 की अवधि के दौरान सकल घरेलू उत्पाद में 16.85 प्रतिशत की वृद्धि और वर्ष 2004-05 से 2014-15 तक के बीच 14.65 प्रतिशत जीएसडीपी के लिए विकास दर (सीएजीआर) आखिरी चार सालों में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो कि राष्ट्रीय औसत से काफी बेहतर है। योजनाकाल में किये गये सरकारी प्रयत्नों से राज्य में औद्योगिक क्रियाओं का विस्तार अवश्य हुआ है फिर भी यह राज्य अन्य राज्यों की तुलना में पीछे है। राज्य में उद्योगों के स्थान विशेष में केन्द्रित हो जाने की स्थानीयकरण प्रवृत्ति से क्षेत्रीय असमानताएं भी उत्पन्न हुई हैं, जिससे जहां एक ओर इन्दौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन, भोपाल आदि जिले औद्योगिक दृष्टि से काफी सम्पन्न हो गये हैं, वहीं दूसरी और छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ, दमोह, सागर जैसे जिले काफी पीछे रह गये हैं। मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास में प्राथमिक एवं तृतीयक क्षेत्र का काफी योगदान है। सबसे अधिक प्रतिशत 42.18 तृतीयक क्षेत्र का तथा 36.73 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र का है। इसने मध्यप्रदेश की आर्थिक वृद्धि में निरन्तर महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

शोध के उद्देश्य

1. म.प्र. की औद्योगिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना॥
2. म.प्र. में लघु एवं सूक्ष्म उद्योगों की स्थिति का अध्ययन करना।
3. म.प्र. में वृहद उद्योगों की स्थिति का अध्ययन करना।
4. म.प्र. में लघु, सूक्ष्म एवं वृहद उद्योगों के विकास पर विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत व्यय का अध्ययन।
5. म.प्र. में सूक्ष्म, लघु एवं वृहद उद्योगों की पंजीकृत इकाइयां, निवेश एवं रोजगार का अध्ययन करना।

म.प्र. में लघु, सूक्ष्म उद्योगों की स्थिति

पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से भारत सरकार सूक्ष्म, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे रही है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में विभिन्न समितियों का गठन कर इस क्षेत्र को प्रोत्साहन व वित्तीय सहायता प्रदान की गयी है। हालांकि यह आवश्यकता समझी जा रही है कि उन सभी कार्यक्रमों की समय-समय पर समीक्षा की जानी चाहिए, जिनका मूल उद्देश्य लघु उद्योगों को सहायता प्रदान करना है, ताकि उनके विकास में आ रही रुकावटों को दूर किया जा सके। एक ऐसे आर्थिक वातावरण का निर्माण हो सके, जिससे सूक्ष्म, लघु उद्योगों को स्वावलंबी बनाया जा सके। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में सूक्ष्म, लघु उद्योगों के विकास पर किये जाने वाले व्यय में भी वृद्धि होती रही है। जैसा कि तालिका से स्पष्ट है -

तालिका क्र. 1

योजनाएं	लघु उद्योगों पर कुल व्यय	योजना के कुल व्यय का प्रतिशत
प्रथम (1951-56)	43	2.1
द्वितीय (1956-61	187	4.0
तृतीय (1961-66)	240	3.1
वार्षिक य ंजनाएँ (1966-69)	1571	23.7
चतुर्थ (1969-74)	243	1.8
पांचवीं (1974-79)	592	1.8
वार्षिक य ंजनाएँ (1979-80)	192	2.1
छठवीं (1980-85)	1780	1.4
सातवीं (1985-90)	2752	1.5
वार्षिक य ंजनाएँ (1990-92)	1819	1.5
आठवीं (1992-97)	6334	1.5
नवीं (1997-2002)	60065	8.25
दसवीं (2002-2007)	2584	
ग्यारहवीं (2007-2012)	11500	
बारहवीं (2012-2017)		

स्रोत : वाणिज्य उद्योग एवं रोजगार मंत्रालय, मध्यप्रदेश

तालिका क्र. 2

सूक्ष्म, लघु उद्योग क्षेत्र की वृद्धि दर

वर्ष	वृद्धि दर (प्रतिशत)	संपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र (प्रतिशत)
2007-08	13.1	11.52
2008-09	13.4	11.58
2009-10	13.8	12.00
2010-11	13.9	12.05
2011-12	13.4	11.58
2012-13	13.8	11.58
2013-14	13.5	12.01
2014-15	14.4	12.42
2015-16	15.9	13.46

स्रोत : सूक्ष्म, लघु उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

तालिका क्र. 3

पंजीकृत सूक्ष्म व लघु उद्योगों की संख्या, निवेश व रोजगार

वर्ष	पंजीकृत इकाईयां	निवेश	रोजगार (रू. लाख में)
2007-08	18582	29827.31	46197
2008-09	20920	36871.84	46891
2009-10	19721	25414.21	41302
2010-11	19856	41316.57	42959
2011-12	20100	43698.50	46095
2012-13	19886	60073.41	46948
2013-14	18653	56103.54	44336
2014-15	19830	71214.10	51056

स्रोत : वाणिज्य उद्योग एवं रोजगार मंत्रालय, मध्यप्रदेश

उपर्युक्त तालिका में वर्ष 2007-08 से वर्ष 2013-14 तक मध्यप्रदेश में स्थापित होने वाले सूक्ष्म, लघु उद्योगों, उनमें निवेश तथा उनसे रोजगार के अवसरों को शामिल किया गया है। पिछले¨ पांच वर्षों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि 2010-10 तथा 2011-12 में पंजीकृत इकाईयों की संख्या (2010) में 0.68 प्रतिशत व 1.22 प्रतिशत की वृद्धि 2009-10 की तुलना में रही। वहीं 2011-12 व 2012-13 में पंजीकृत इकाईयों की संख्या में (क्रमश; 19886 व 18653) क्रमश: 1.06 प्रतिशत तथा 6.2 प्रतिशत की कमी हुई। पुनः 2014-15 में पंजीकृत इकाईयों की संख्या 19830 में 6.30 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उपर्युक्त तालिका से यह भी ज्ञात होता है कि सूक्ष्म व लघु उद्योगों में निवेश में 2009-10 की तुलना में

2010-11 व 2012-13 में 5.77 प्रतिशत तथा 37.47 प्रतिशत की वृद्धि निरन्तर बनी रही, किन्तु 2013-14 में 3.39 प्रतिशत की कमी रही। पुनः 2014-15 में 26.93 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

उपर्युक्त तालिका से यह भी ज्ञात होता है कि सूक्ष्म व लघु उद्योगों से रोजगार में वर्ष 2010-11 में 4.01 प्रतिशत से वृद्धि रही। उसके बाद वर्ष 2011-12 व 2012-13 में भी निरन्तर वृद्धि क्रमशः 7.29 प्रतिशत व 1.8 प्रतिशत रही। वर्ष 2013-14 में 5.56 प्रतिशत रोजगार में कमी आयी वहीं पुनः 2014-15 में रोजगार में 15.15 प्रतिशत वृद्धि हुई।

म.प्र. में मध्यम/वृहदउद्योगों की स्थिति

वृहद उद्योग (पूँजी निवेश, उत्पादन एवं निर्माण विस्तार को ध्यान में रखते हुए) व्यावसायिक संगठन के सिद्धांतानुसार प्रायः ही अंश पूंजी से निर्मित संयुक्त स्कंध उद्योग अथवा निगम होते हैं। भारत में टाटा, रिलायंस एवं बिरला समूह के सभी उपक्रम इस श्रेणी के हैं। इनका प्रबंधकीय ढांचा प्रतिनिधित्व एवं निर्वाचन पर आधारित होता है। मध्यम आकार के उद्योग प्रायः निजी कंपनी एवं साझेदारी के रूप में कार्यरत हैं। पूंजी निवेश, संचालन एवं लाभ-हानि का विभाजन पारस्परिक समझौतों पर निर्भर करता है। उत्पादन का कार्य जहां वृहद् परिमाण में कर रहे है, वहीं वितरण एवं परिवहन जैसे कार्य निजी कंपनी एवं साझेदारी फर्म्स द्वारा किया जा रहा है। भारत की औद्योगिक संरचना त्रिस्तरीय है - वृहद् परिमाण उद्योग, मध्यम उद्योग एवं लघु परिमाण उद्योग। इन तीनों का भेद, पूँजी निवेश, उत्पादन की मात्रा एवं विविधता, बाजार का विस्तार, रोजगार की मात्रा, शक्ति एवं तकनीक के उपयोग आदि के आधार पर स्थापित किया जाता है। वृहद् उद्योग के लिए भारी पूँजी की आवश्यकता होती है। बहु परिमाण उत्पादन हेतु इन्हें विद्युत शक्ति एवं नवीनतम तकनीक पर निर्भर रहना पड़ता है। इनका बाजार अंतर्राष्ट्रीय होने के कारण इन्हें पूंजी गठन उद्योग कहा जाता है। पहले 25 लाख का पूंजी निवेश इनकी पहचान होती थी, अब इसे बढ़ाकर तीन करोड़ कर दिया गया है। बड़े उद्योग प्रायः स्फीति एवं विस्फीति, व्यापार चक्र, राजनीतिक गतिविधियां आदि से प्रभावित होते रहते हैं।

तालिका क्र. 4

मध्यम/वृहद उद्योग क्षेत्र की वृद्धि दर

वर्ष	वृद्धि दर (प्रतिशत)	सम्पूर्ण औद्योगिक क्षेत्र (प्रतिशत)
2007-08	17.1	24.13
2008-09	17.4	23.10
2009-10	17.9	24.62
2010-11	18.1	24.39
2011-12	18.4	24.78
2012-13	18.6	26.12
2013-14	17.4	26.31
2014-15	19.1	27.01
2015-16	19.3	27.02

स्रोत : माध्यम/वृहद उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

मध्यम व वृहद उद्योग की पंजीकृत इकाईयां व निवेश

वर्ष	पंजीकृत इकाईयां	रोजगार
2007-08	16312	71012
2008-09	17001	81034
2009-10	17002	91001
2010-11	18114	113456
2011-12	16102	121643
2012-13	14104	141012
2013-14	15671	151013
2014-15	18001	176414

स्रोत : वाणिज्य उधोग एवं रोजगार मंत्रालय, मध्यप्रदेश

उपर्युक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि वर्ष 2007-08 में पंजीकृत इकाईयों की संख्या 16312 थी जो बढ़कर वर्ष 2014-15 में 1801 रही। इसी तरह से रोजगार के संदर्भ में वर्ष 2007-08 में 71012 तथा क्रमश; बढ़ते हुये 2010-11 में 113456 व वर्ष 2014-15 में 176414 रही।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि म.प्र. में सूक्ष्म/लघु एवं मध्यम एवं वृहद उद्योगों की पंजीकृत इकाईयों में वर्ष 2007-08 से वर्ष 2014-15 में निरन्तर वृद्धि हुई एवं सूक्ष्म व लघु उद्योग से रोजगार में वर्ष 2010-11 में 4.01 प्रतिशत से वृद्धि रही। उसके बाद वर्ष 2011-12 व 2012-13 में भी निरन्तर वृद्धि क्रमश: 7.29 प्रतिशत व 1.8 प्रतिशत रही। वर्ष 2013-14 में 5.56 प्रतिशत रोजगार में कमी आयी, वहीं पुनः 2014-15 में रोजगार में 15.15 प्रतिशत वृद्धि हुई। इसी तरह सेरोजगार के संदर्भ में मध्यम एवं वृहद उद्योगों मे वर्ष 2007-08 में 71012 तथा क्रमश: बढ़ते हुये 2010-11 में 113456 व वर्ष 2014-15 में 176414 रही।

सदंर्भ ग्रन्थ

1.लघु उद्योगों का अर्थशास्त्र, पाण्डेय, सरोज कुमार, क्लासिक पब्लिकेशन, दिल्ली।

2. उद्यम, उद्यमी एवं स्वरोजगार, म.प्र. उद्यमिता विकास केन्द्र।

3. म.प्र. का आर्थिक विकास, श्रीवास्तव,ओ.एस., म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।